जैसलमेर और पर्यटन का बदलता स्वरूप- स्वर्ण नगरी से अनुभवात्मक यात्रा तक

राजस्थान के थार मरुस्थल की गोद में बसा जैसलमेर केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि इतिहास, संस्कृति, साहस और सौंदर्य का अनूठा संगम है। 'स्वर्ण नगरी' के नाम से प्रसिद्ध यह नगर अपने पीले बलुआ पत्थरों से निर्मित किलों, हवेलियों और मंदिरों के कारण सूर्य की रोशनी में स्वर्णिम आभा बिखेरता है। समय के साथ जैसलमेर का पर्यटन केवल दर्शनीय स्थलों तक सीमित न रहकर सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय आयामों से जुड़ता चला गया है। आज जैसलमेर पर्यटन का स्वरूप निरंतर बदल रहा है— परंपरा से आधुनिकता और दर्शन से अनुभव की ओर।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और पर्यटन की नींव- जैसलमेर की स्थापना 1156 ईस्वी में भाटी राजपूत शासक रावल जैसल ने की थी। यह नगर प्राचीन व्यापारिक मार्गों पर स्थित था, जहाँ से रेशम, मसाले और अन्य वस्तुओं का व्यापार होता था। यही व्यापारिक समृद्धि आगे चलकर भव्य हवेलियों, मंदिरों और किले के निर्माण का आधार बनी। जैसलमेर किला, जिसे 'सोनार किला' भी कहा जाता है, आज विश्व के गिने-चुने 'जीवित किलों' में से एक है। यह ऐतिहासिक धरोहर ही जैसलमेर पर्यटन की आधारशिला बनी।

पारंपरिक पर्यटन का स्वरूप- बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक जैसलमेर का पर्यटन मुख्यतः ऐतिहासिक और स्थापत्य स्थलों तक सीमित था। पर्यटक किला, पटवों की हवेली, नाथमल की हवेली, सलीम सिंह की हवेली और गड़ीसर झील देखकर लौट जाते थे। पर्यटन का यह स्वरूप दर्शक-केंद्रित था, जिसमें स्थानीय समाज की भागीदारी सीमित थी और रोजगार के अवसर भी मौसमी थे।

बदलता समय, बदलता पर्यटन- इक्कीसवीं सदी में जैसलमेर पर्यटन ने एक नया मोड़ लिया। अब पर्यटक केवल इमारतें देखने नहीं, बल्कि मरुस्थलीय जीवन को महसूस करने के लिए आने लगे। इस बदलाव के पीछे वैश्वीकरण, डिजिटल प्रचार, सोशल मीडिया और अनुभवात्मक पर्यटन की बढ़ती प्रवृत्ति प्रमुख कारण रहे।

1. डेज़र्ट टूरिज्म और कैंप संस्कृति- सम, खुरी और लोधरुवा जैसे क्षेत्रों में ऊँट सफारी, जीप सफारी और डेज़र्ट कैंप्स ने जैसलमेर पर्यटन को नई पहचान दी। रात के समय लोकसंगीत, कालबेलिया नृत्य, मंगणियार गायन और पारंपरिक राजस्थानी भोजन पर्यटकों को मरु

संस्कृति से जोड़ते हैं।

2. हेरिटेज होटल और होम-स्टे- पुरानी हवेलियों और महलों को हेरिटेज होटल में परिवर्तित किया गया, जिससे पर्यटकों को शाही जीवन का अनुभव मिला। साथ ही होम-स्टे संस्कृति ने स्थानीय परिवारों को पर्यटन से सीधे जोड़ा, जिससे आर्थिक लाभ का विकेंद्रीकरण संभव हुआ।

3. सांस्कृतिक और उत्सव पर्यटन- मरु महोत्सव जैसलमेर पर्यटन का प्रमुख आकर्षण बन चुका है। ऊँट सज्जा, लोकनृत्य, हस्तशिल्प प्रदर्शनी और पारंपरिक वेशभूषा ने पर्यटन को सांस्कृतिक गहराई प्रदान की है।

4. सीमावर्ती और देशभक्ति पर्यटन- तनोट माता मंदिर और लोंगेवाला युद्ध स्थल जैसे स्थानों ने जैसलमेर को देशभक्ति पर्यटन के मानचित्र पर स्थापित किया है। यह स्वरूप युवाओं और छात्रों को विशेष रूप से आकर्षित करता है।

पर्यटन का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव- पर्यटन ने जैसलमेर की अर्थव्यवस्था को नया आधार दिया है। होटल, परिवहन, गाइड सेवा, हस्तशिल्प, लोक कलाकार और महिला स्व-सहायता समूहों को रोजगार मिला है। महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है और स्थानीय पहचान को वैश्विक मंच मिला है। हालाँकि इसके साथ चुनौतियाँ भी आई हैं–भूमि की कीमतों में वृद्धि, स्थानीय निवासियों का विस्थापन, सांस्कृतिक व्यावसायीकरण और मौसमी रोजगार की समस्या।

पर्यावरणीय चुनौतियाँ- मरुस्थलीय क्षेत्र होने के कारण जैसलमेर का पर्यावरण अत्यंत संवेदनशील है। अनियंत्रित कैंपिंग, प्लास्टिक कचरा, भूजल दोहन और रेत के टीलों से छेड़छाड़ पर्यावरणीय असंतुलन पैदा कर रही है। यदि पर्यटन विकास बिना योजना के हुआ, तो यह स्वर्ण नगरी अपनी प्राकृतिक आत्मा खो सकती है।

सतत पर्यटन की आवश्यकता- आज जैसलमेर के लिए सतत पर्यटन सबसे बड़ी आवश्यकता है। सीमित पर्यटक क्षमता, पर्यावरण-अनुकूल कैंप, स्थानीय सामग्री का उपयोग, जल संरक्षण, सौर ऊर्जा और स्थानीय समुदाय की भागीदारी इस दिशा में आवश्यक कदम हैं।

भविष्य की दिशा- डिजिटल गाइडिंग, विरासत संरक्षण, इको-टूरिज्म, और युवाओं के लिए पर्यटन-आधारित कौशल प्रशिक्षण जैसलमेर पर्यटन को संतुलित और टिकाऊ बना सकते हैं। विकास और संरक्षण के बीच संतुलन ही इसकी दीर्घकालिक सफलता की कुंजी है।

निष्कर्ष- जैसलमेर और पर्यटन का स्वरूप समय के साथ गहराता

और विस्तृत होता गया है। आज यह नगर केवल देखने की जगह नहीं, बल्कि अनुभव करने की यात्रा बन चुका है। यदि यह परिवर्तन संवेदनशीलता, पर्यावरणीय चेतना और सामाजिक ज़िम्मेदारी के साथ आगे बढ़े, तो जैसलमेर आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उतना ही स्वर्णिम बना रहेगा। -MUKESH BISSA

सीडीपी ने लैंक्सेस को पर्यावरण सुरक्षा के लिए 'ए' लिस्टै में शामिल किया

मुंबई, - क्लाइमेट प्रोटेक्शऽन पहल सीडीपी ने स्पेशियलिटी केमिकल्सम कंपनी लैंक्सेस को एक बार फिर पर्यावरण सुरक्षा के लिए 'ए' लिस्टी में शामिल किया है। लैंक्सेतस ने लगातार सांतवी बार यह उपलब्धि हासिल की है। ÷ए÷ रेटिंग के साथ यह कंपनी दुनिया की 22,100 से अधिक कंपनियों में शीर्ष 4 प्रतिशत में आती है।

सीडीपी ने लैंक्सेकेस की बिज़नेस रणनीति, लक्ष्य निर्धारण, उत्सर्जन में कमी, क्लाइमेट-फ्रेंडली उत्पाद, गवर्नेंस और वैल्यू चेन क्षेत्रों में विशेष रूप से सकारात्मक रेटिंग दी है। सीडीपी के विशेषज्ञ उन कंपनियों को ÷ए÷ रेटिंग देते हैं जो क्लाइमेट प्रोटेक्शन के उपायों को पूरी पारदर्शिता के साथ लागू करती हैं। इसके तहत सत्यापित रणनीतियाँ, विज्ञान-आधारित लक्ष्य और मौजूदा क्लाइमेट प्रोटेक्शन प्लान को महत्व दिया जाता है। जल प्रबंधन के क्षेत्र में भी लैंक्सेस.स ने शानदार प्रदर्शन किया है। सीडीपी ने कंपनी को ए-ग्रेड दिया, जो दूसरे सर्वोत्तम स्तर के बराबर है। लैंक्सेसस लगातार 2012 से सीडीपी को रिपोर्टिंग कर रही है।

इकोवाडिस ने भी दी गोल्ड रेटिंग की पुष्टि- दिसंबर 2025 में सस्टेनेबिलिटी प्लेटफॉर्म इकोवाडिस ने लैंक्सेस का मूल्यांकन किया। 100 में से 83 अंक प्राप्त करके कंपनी ने पिछले साल के प्रदर्शन से बेहतर परिणाम हासिल किया और शीर्ष 2 प्रतिशत कंपनियों में शामिल हुई। इस रेटिंग के साथ लैंक्सेसे के गोल्ड0 स्टेपदस की फिर से पुष्टि हुई। लैंक्सेसस एजी के बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट के सदस्य हुबर्ट फिंक का कहना है- ÷सीडीपी और इकोवाडिस की ताजा रेटिंग्स यह साबित करती हैं कि सस्टेनेबिलिटी पर हमारा फोकस अंतरराष्ट्रीय मानक तय कर रहा है। हमारी यह प्रगति हमारे ग्राहकों के लिए भी फायदेमंद है, जो अपनी सस्टेनेबिलिटी लक्ष्य हासिल करना चाहते हैं।÷

प्रमुख संस्थाओं द्वारा मान्यता- सीडीपी एक गैर-लाभकारी संगठन है, जो कंपनियों के ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, जल प्रबंधन और जंगल संरक्षण पर वार्षिक डेटा इकट्ठा करता है। 2025 में 22,100 से अधिक कंपनियों ने अपनी रिपोर्ट सबमिट की। सीडीपी प्लेटफॉर्म को मार्केट स्टैंडर्ड माना जाता है और यह वैश्विक सूचीबद्ध बाजार का आधा हिस्सा कवर करता है।

हैना जोसेफ हॉस्पिटल लिमिटेड का आईपीओ खुलेगा 22 जनवरी को

मुंबई मदुरै स्थित न्यूरोसाइंसेज़ और ट्रॉमा पर केंद्रित मल्टी-स्पेशियलिटी टर्शियरी केयर अस्पताल हैना जोसेफ हॉस्पिटल लिमिटेड (हैना जोसेफ / कंपनी) अपना इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग (आईपीओ) 22 जनवरी 2026 को खोलने जा रही है। कंपनी इस आईपीओ के माध्यम से ?42.00 करोड़ (ऊपरी प्राइस बैंड पर) जुटाने का लक्ष्य रखती है, जो 60,00,000 इक्विटी शेयरों के फ्रेश इश्यू के जरिए होगा। कंपनी के शेयर बीएसई एसएमई प्लेटफॉर्म पर सूचीबद्ध किए जाएंगे।

इक्विटी शेयर आवंटन - क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (QIB) - अधिकतम 28,46,000 इक्विटी शेयर, नॉन-इंस्टीट्यूशनल निवेशक (NII) - न्यूनतम 8,58,000 इक्विटी शेयर, व्यक्तिगत निवेशक (रिटेल) - न्यूनतम 19,96,000 इक्विटी शेयर, मार्केट मेकर - 3,00,000 इक्विटी शेयर, आईपीओ से प्राप्त शुद्ध आय का उपयोग रेडिएशन ऑन्कोलॉजी सेंटर की स्थापना हेतु पूंजीगत व्यय और सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए किया जाएगा। एंकर पोर्शन बुधवार, 21 जनवरी 2026 को खुलेगा, जबकि इश्यू गुरुवार, 22 जनवरी 2026 को खुलेगा और मंगलवार, 27 जनवरी 2026 को बंद होगा। इस इश्यू के बुक रनिंग लीड मैनेजर कैपिटल स्क्वेयर एडवाइजर्स प्राइवेट लिमिटेड हैं, और रजिस्ट्रार टू द इश्यू बिगशेयर सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड है।

एम एस केशरी पब्लिकेशन द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन

एम एस केशरी पब्लिकेशन द्वारा फरवरी माह में कवि सम्मेलन, पुस्तक विमोचन व सम्मान समारोह का आयोजन मुजफ्फरपुर बिहार में किया जाएगा। एम एस केशरी पब्लिकेशन को वर्तमान समय में पूरे भारत देश में सशक्त व विश्वनीय पब्लिकेशन के रूप में जाना जाता है। पब्लिकेशन द्वारा हर माह काव्यगोष्ठी, कवि सम्मेलन, कविता - विडियो प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है वही ई पत्रिका, साझा संकलन, एकल पुस्तकें प्रकाशित किया जाता है। पब्लिकेशन की संस्थापिका मुस्कान केशरी जी का एकमात्र उद्देश्य है कि नवोदित व वरिष्ठों को एक मंच पर एक जैसा सम्मान मिले और हर किसी की प्रतिभा को निखारना का अवसर दिया जाए। इसी उद्देश्य के साथ पब्लिकेशन विगत कई वर्षो से सक्रिय रूप से कार्यरत हैं, साहित्यिक, सांस्कृतिक व सामाजिक क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान दे रही है। सम्मिलित होने के लिए सम्पर्क करें 6203124315

व्यंग्य : समाज को क्या पड़ी साहब!

आप अखुवार के अंदरूनी पन्ने ज़रूर पढ़ते होंगे। हां हां वही, स्थानीय समाचार वाले। हर दिन पढ़ते होंगे एक या डेढ़ कॉलम की छोटी सी न्यूज़। एक अदद पासपोर्ट साइज़ के फोटो के साथ। किसी न किसी बंदे या बंदी की सफलता से जुड़ी। उसकी छोटी या बड़ी उपलब्धि को दर्शाने वाली। खबर किसी की भी हो उसका खात्मा एक खास पंक्ति से होता है। दो चार शब्द भले ही बदल जाएं। पंक्ति कुछ ऐसी ही होती है। अमुक की इस उपलब्धि पर परिजनों सहित समाज ने हर्ष जताया है। फलाने की उपलब्धि से समूचा समाज गौरवान्वित हुआ है। ढिकाने की कामयाबी से समाज का नाम रोशन हुआ है। बस, यही लाइन आज के पोस्टमार्टम का विषय है। खास नहीं बकवास के तौर पर। मनगढ़ंत और हास्यास्पद होने के कारण। हो सकता है बीते ज़माने में ऐसा होता रहा हो। अब होता होगा इसकी विश्वसनीयता संदिग्ध है। मुझे पता है कि यह लाइन जबरन घुसेड़ी जाती है। अपनी सजलता का ढिंढोरा खुद पीटने या पिटवाने वाले के द्वारा। समाज के नाम पर अपना मान बढ़ाने के लिए। पत्रकार रहा हूं साहब! दो चार नहीं पूरे चालीस साल। बड़ा नहीं, छोटा मोटा ही सही। खूब जानता हूं कि यह पंक्ति हमारे जैसे भी ठूंस देते हैं अपने मन से। एक की आड़ में पूरी बिरादरी को साधने के चक्कर में।

पता नहीं जी, क्या समझते हैं लोग समाज को। यह कोई समाज का काम है। किसी की भी उपलब्धि पर गौरवान्वित हो जाना। समाज को क्या पड़ी हर्षित होने की। और काम नहीं हैं क्या उसके पास गदगद होने के सिवा? गदगद भी यहां ÷गुदड़ी÷ के लालों पर। जो चले आते हैं लड्डू लेकर सड़ना मंजूर है, जुड़ कर रहना नहीं। तभी तो पकते हैं केमिकल लोचे की जद में आकर। सिर्फ़ और सिर्फ़ सड़ांध फैलाने के लिए। अपने आसपास के इलाके में जुगनू की तरह लुपझुप करते जलकूकड़ों के झुंड। पता नहीं साहब, कौन सा समाज होता है वो। जो सागर सी सोच के साथ गर्व करे अपनी हर लहर पर। हमने तो नाक भौं सिकोड़ने, मुंह लटकाने और मन मसोसने वाले कम्बख्त ही देखे हैं अब तक। मीनमेख निकालने और जल भुन कर राख होने वाले। राख भी ऐसी कि न हाथ साफ करने के काम आए, न बर्तन धोने के। समरसता के समीकरण रचने वाले समुच्चय भी नहीं। केवल नफ़ा नुकसान का जोड़, बाक़ी, गुणा, भाग जानने वाले। एक अंगूठे और तीन उंगलियों के इशारे पर कठपुतली नचाने वाले। छोटी उंगली को उसकी हैसियत का आभास कराने के अंदाज़ में। वो भी किसी बड़े मंच नहीं, चार बाय छह की चादर के पर्दे पर। पर्दा भी एक चरमराती सी चारपाई पर निर्भर। अब आप ही सोच कर देखिए। ये काहे आह्लादित, आनंदित होने लगे किसी की निजी या पारिवारिक कामयाबी पर? वैसे भी जो किसी पिद्दी की लज़्ज़त पर लज्जित न हो, काहे का शोरबा? शोरबा वो जो बंद पतीले में खदक कर भाप से तश्तरी हिलाए। कुक्कर में हो तो सीटी को फुदकने पर मजबूर किए बिना चैन न ले। बस, यही हाल समाज का होना चाहिए। फिर चाहे कोई उसे ठेंगे पर या कहीं और। असल समाज वो, जिसका रामगढ़ चंद घरों के बीच सिमटा हो। एक गब्बर के आधिपत्य में। सांभा और कालिया टाइप दो चार गुर्गों की निगरानी वाला। फिर कैसा ठाकुर और काहे के इमाम साहब? बसंती इशारे पर नाचे और राधा मुंह तक न खोल सके। जय और वीरू न टिक पाएं, न पनप सकें। फिर चाहे सबको ÷भरतपुर लुट गओ रात मोरी अम्मा÷ क्यों न गाना पड़े।

लगना तो चाहिए ना कि समाज कुपढ़ कागों का नहीं, जो रोटी का एक टुकड़ा नज़र आते ही कुटुंब जुटा ले। मगरमच्छों का है, जो साबुत निगलना जानता है। बिना आवाज़ किए, बिना डकार लिए। समाज ने क्या कोई ठेका लिया है, किसी की एलईडी से अपने नियॉन साइन बोर्ड को रोशन होने देने का? उसका उजयाला चहेते चिरागों की पीली और मद्धिम रोशनी पर निर्भर है। वो भी लपलपाती और झपझपाती हुईं। कुएं के मेढ़कों को क्या लेना किसी की फ्री स्टाइल तैराकी से? फिर चाहे कोई मेडल लाए या खिताब। समाज कोई भोंपू है या मंदिर पर लटका घंटा, जिसे कोई भी बजा ले। ये तो वो शंख है साहब, जिसे बजाने का माद्दा दमखम वाली फूंक में होता है। पता नहीं आप कैसे आप इसे ÷ढपोर शंख÷ मान रहे हैं। अजी, ये तो वो पाञ्चजन्य का अवतार है जो जिस आंगन को चाहे घड़ी भर में कुरुक्षेत्र बना डाले। ये कोई मुर्गा या तीतर, बटेर नहीं जो फुदकता फिरे। इसे शुतुरमुर्ग मानिए। सबसे बड़ा अंडा देने वाला धरती का सबसे बड़ा पक्षी। आपदा की आंधी में चोंच और खोपड़ी उदासीनता की रेत के टीले में घुसा लेने वाला। मेरे हिसाब से इसे भी राजनैतिक दल की मान्यता मिल जानी चाहिए अब। दल भी ऐसा वैसा नहीं, सिंहासन पूजक। व्यक्तिनिष्ठ, अधिनायकवादी और पिछलगुओं के झुंड टाइप। आंतरिक और वाह्य दोनों फॉर्मेट में प्रज्ञाचक्षु। मन मन भाती, ठकुर सुहाती में प्रवीण पुछल्लों का झुंड। बिलकुल कागज़ी गुलदस्ता टाइप। समाज का काम वैसे भी अब सहयोग और सामंजस्य की मशाल जलाना नहीं। समरसता और संवेदना का अलख जगाना नहीं। समय किसके पास है अब इन कवायदों के लिए। तेरी मेरी, लल्लो चप्पो करने, इसकी टोपी उसके सर धरने से ही फुर्सत नहीं। अब ज़माने की सोचें या अपने पाचन तंत्र की, जो निंदा रस का पान किए बिना स्वस्थ नहीं रह सकता। ज़रूरत से ज़्यादा लिखे पढ़ो की समाज कहलाने वाली जमात ज़रा ज़रा सी बात पर खुशी का इज़हार करने लगे तो क्या फ़र्क़ उसमें और कम पढ़ें लिखों में? अपनों की नाकामी देखकर दूसरे की कामयाबी पर पल भर में न सूखे, वो काहे का मुंह? काहे का हलक़, जो अपने मद की मदिरा से तर न रहे 12 माह 365 दिन। वो भी ट्वेंटी फॉर इंटू सेवन। फिर कोई फॉर ट्वेंटी कहे तो कहता रहे। ÷ज़िंदाबाद या तो हम और हमारी हुकूमत÷ और ÷हमारी रियासत, हमारी सियासत÷ यही तो है इस जमात का बोध वाक्य। अब किसे पढ़ी है जो ज़हनी अंधों को आईना दिखाए। पैदाइशी गंजों को कंघा थमाए? कैसे समझाए कि ये ग्लोबलाइजेशन का दौर है। नई पीढ़ी जाति और गौत्र देख कर नहीं, योग्यता और पात्रता के अनुसार साथी चुन रही है। समाजों की हर दिन बदलती डेमोग्राफी समाज का बेड़ा गर्क़ करने का संकल्प लिए बैठी है। दकियानूसी के साथ अड़ियलपन दिखाने वालों के खिलाफ़। जनम, परण और मरण के लिए कोई भी किसी ऐसे समूह पर आश्रित नहीं, जो घर की दुकान बन चुका हो। रूप धारण कर चुका हो एक गिरोह का। अब मर्ज़ी आपकी। सूरत सुधारो या आईने फोड़ों। उब्रू और चमगादड़ की तरह अंधेरे के बने रहो आदी और खंडहर को मानो अपनी सल्तनत। याद रखना हर्षित और गर्वित होना न आपकी नीयत में है, न नियति में। तो प्यारे पत्रकार साथियों अब अपने मन से किसी समाज को गौरवान्वित या उल्लासित बता कर जबरन झूठों के सिरमौर बनने की कोशिश छोड़ो। दौर दीप जलाने का नहीं आग लगाने का है। ऐसे में किसी की सफलता पर एक अदना सा समाज खुश होने के मूड में नहीं

और तुम तुले हो शहर व अंचल तक को जबरन प्रसन्न साबित करने में। जो मुमकिन ही नहीं नामुमकिन है। आई बात समझ में..?? **प्रणय प्रभात, श्योपुर (मध्यप्रदेश) 8959493240**

नैतिकता का विचार लंबे समय से भारतीय संस्कृति में निहित है- पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद

आईआईएम मुंबई और जेएनयू के सहयोग से देश का पहला रिस्पॉन्सिबल नेशंस इंडेक्स लॉन्च

मुंबई। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (आईआईएम) मुंबई, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) और डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर (डीएआईसी) ने वर्ल्ड इंटेलेक्चुअल फाउंडेशन के साथ अपने सहयोग की घोषणा करते हुए भारत का पहला रिस्पॉन्सिबल नेशंस इंडेक्स (ऋहढ्ढ) लॉन्च किया है। यह शुरुआत देश के पूर्व राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ कोविंद की उपस्थिति में की गई। विश्व स्तर पर आधारित यह इंडेक्स पारंपरिक जीडीपी-आधारित पैमानों से आगे बढ़ता है। इस घोषणा ने आज के तेजी से बदते जटिल वैश्विक माहौल में ज़रूरी जवाबदेही, दीर्घकालिक प्रतिबद्धता और नैतिक शासन पर जोर को रेखांकित करती है और जिम्मेदारी और क्रॉस-नेशनल लर्निंग के महत्व पर भी प्रकाश डालती है। 154 देशों का मूल्यांकन पारंपरिक आर्थिक संकेतकों से परे सफलता के आधार पर किया जा रहा है। यह इंडेक्स एक पारदर्शी और समावेशी मूल्यांकन ढांचा प्रदान करता है। इस प्रगतिशील दृष्टिकोण के माध्यम से, सूचित पॉलिसी मेकिंग, रचनात्मक अंतर्राष्ट्रीय संवाद और जीवन की बेहतर गुणवत्ता को प्रोत्साहित किया जा सकता है। इस मौके पर भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने कहा ÷ईमानदारी से कहूँ तो यह इंडेक्स एक अनुभव और विचार है। इससे हम गणना कर सकते हैं कि राष्ट्र वास्तव में अपने नागरिकों और मानवता के साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं। वास्तव में नैतिकता का विचार लंबे समय से भारतीय संस्कृति में निहित है।÷ इस दौरान आईआईएम मुंबई के डायरेक्टर प्रोफेसर मनोज तिवारी ने कहा ÷हम अकादमिक संस्कृति से परे नॉलेज को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। एक संस्थान के रूप में यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उन मूल्यों की पुष्टि करें जो श्रेष्ठता की ओर ले जाते हैं। यह जांचना महत्वपूर्ण है कि आज क्या हम सिर्फ आर्थिक रूप से मजबूत या सभी सामाजिक रूप से जिम्मेदार भी हैं।÷ लॉंच के मौके पर जेएनयू की वाइस चांसलर शांतिश्री पंडित ने यह कहा कि अनिश्चितताओं की दुनिया में, वैधता की ताकत सिर्फ़ शक्ति से नहीं, बल्कि ज़िम्मेदारी से आती है। तीन आयामों पर बना यह रिस्पॉन्सिबल नेशंस इंडेक्स, गरिमा और नागरिकों की भलाई पर केंद्रित आंतरिक ज़िम्मेदारी, स्थिरता और क्लाइमेट एक्शन पर केंद्रित पर्यावरणीय ज़िम्मेदारी, और शांति और वैश्विक सहयोग में योगदान को मापने वाली ज़िम्मेदारी को बढ़ावा देता है। इसका मानव-केंद्रित विज़न ऐसे समय में उम्मीद जगाता है जब सुधारों की बहुत ज़रूरत है।

शिखा अग्रवाल को अंग्रेजी कविता में डिप्लोमा प्रमाणपत्र

कोटा / लेखिका शिखा अग्रवाल को अंग्रेजी कविता में ऑन लाइन पोईट्स नेस्ट इंटरनेशनल प्लैटफॉर्म द्वारा डिप्लोमा प्रमाण पत्र जारी किया गया है। नवंबर 25 से जनवरी 26 सत्र के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई अंग्रेजी कवयित्रियों ने इसमें भाग लिया था। इसमें भारत से भीलवाड़ा की श्रीमती शिखा के साथ-साथ श्रीमती सीमा दीवान और ग्रीस की अन्ना मावरूफी को डिप्लोमा प्रमाण पत्र दिया गया है। शिखा ने बताया कि उन्होंने सभी लक्ष्य पूरे करते हुए अंग्रेजी की 10 कविताएं और 3 निबंध भेजे थे। अंग्रेजी निबंध द रोमांटिक एंड विक्टोरियन पोईट्स , पोइट्री एंड मी एवं सिग्नीफिकेन्स आफ फिगर आफ स्पीच इन इंग्लिश पोईट्री विषयों पर भेजे गए थे। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व भी अन्तर्राष्ट्रीय ऑन लाइन अंग्रेजी कविता प्रतियोगिता में शिखा को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ था। शिखा अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में कविताएँ लिखती हैं। इन्होंने अंग्रेजी में शृंगार विषय पर फैशन-एन इन्स्टिक्ट , उदयपुर-वर्ल्ड फेमस टूरिस्ट डेस्टिनेशन एवं सह लेखकों के साथ वर्ल्ड हेरिटेज स्लोबल टू लोकल-लिस्टेड विथ यूनेस्को बुक्स लिखी हैं। दो पुस्तकों ए विदेश प्रवास हिंदी सेवा संस्मरण / मेमोरीज एवं वॉयस ऑफ नेचर (चिल्ड्रन स्टोरीज) का अंग्रेजी अनुवाद भी किया है। हिंदी में राजस्थान साहित्य अकादमी के आर्थिक सहयोग से ÷ मन दर्पण के प्रतिबिंब÷ काव्य संग्रह के साथ - साथ हेल्थ केयर, टेक्सटाइल सिटी भीलवाड़ा , अतुल्य अजमेर, सह लेखक , ये है हमारी रंग बिरंगी बूँदी, सह लेखक के साथ लिखी है। शृंगार एक स्वाभाविक वृति का संपादन भी किया है। बाल कविताओं की कृति प्रकाशनाधीन है। इनको लेखन के लिए 30 से अधिक प्रशस्ति पत्रों के साथ प्रमुख रूप से वैश्विक समरस संस्थान साहित्य सृजन भारत, गांधीनगर, गुजरात द्वारा समरस श्री साहित्य , साहित्य मंडल श्रीनाथद्वारा द्वारा काव्य कुमुद, श्री भारतेंदु समिति कोटा द्वारा साहित्य श्री , अणुव्रत समिति भीलवाड़ा द्वारा अणुव्रत काव्यधारा और लघु उद्योग भारती भीलवाड़ा द्वारा विदुषी नारी रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया।

महिदपुर के विद्यार्थियों ने शतरंज में जिले में किया बेहतर प्रदर्शन, काशवी का हुआ राज्य स्तर पर चयन

महिदपुर। जवाहर डोसी पीयूष। मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले खेलो एमपी यूथ गेम्स के अंतर्गत इस वर्ष भी विकासखंड स्तर से लेकर राज्य स्तर तक विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसी क्रम में महिदपुर ब्लॉक में शतरंज प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों का चयन जिला स्तर की प्रतियोगिता के लिए किया गया।जिला स्तर पर जेडी स्कूल की छात्रा काशवी जैन ने श्रेष्ठ खेल का प्रदर्शन करते हुए राज्य स्तर के लिए अपना स्थान सुनिश्चित किया।अब काशवी जैन नर्मदापुरम में आयोजित होने वाली राज्य स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता में जिले का प्रतिनिधित्व करेंगी। इसके अतिरिक्त जिला स्तर पर संत जोसेफ स्कूल की खुशी शर्मा,अरहम जैन,जेडी स्कूल की प्रिशा सोनगरा,सर्वज्ञ रुणवाल एवं अवि कोचर ने भी अपने शानदार खेल प्रदर्शन से उपस्थित दर्शकों की सराहना प्राप्त की। छात्र-छात्राओं की इस उपलब्धि पर उनके परिजनों एवं विद्यालय परिवार ने हर्ष व्यक्त करते हुए उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

शासन निर्देश पालन में जल सुनवाई आयोजित,मौके प्राप्त पानी सैंपल की जांच की

महिदपुर। जवाहर डोसी पीयूष विदित हो कि शासन द्वारा नागरिकों को स्वच्छ जल उपलब्ध कराने एवं दूषित पानी की रोकथाम के उद्देश्य से प्रत्येक मंगलवार को जल सुनवाई आयोजित किए जाने के निर्देश जारी किए गए हैं। इस अवसर पर शाखा प्रभारी गोरीलाल मालवीय,लैब सहायक जाकिर अली उपस्थित थे।